IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सार्थकता का अध्ययन

रमनदीप कौर
शोधकर्त्री (एम. एड)
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरूक्षेत्र

डॉ ज्योति खजूरिया
असिस्टैन्ट प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

सारांश

प्रस्तुत शोध का मुख्य उेश्य आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सार्थकता का अध्ययन करना है। आर्य समाज के शैक्षिक उेश्यों का वर्तमान शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। आर्य समाज के उपदेश एवं सरल सिद्धांतों द्वारा शिक्षा के महत्व का ज्ञान कराया। साथ ही समाज के लोगों को शिक्षा के क्षेत्र में उन्नतशील एवं विकसित किया। प्रस्तुत शोध में शोध के उेश्यों की पूर्ति हेतु दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया है। शोध का आधार शैक्षिक विचार, साथर्कता एवं शैक्षिक निहितार्थ है। प्रस्तुत शोध के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विशेष महत्व एवं स्थान है। आर्य समाज के शैक्षिक विचारों में राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं नैतिकता आदि व्यवहारिक पक्ष को विशेष महत्व दिया गया है साथ ही हिंदू समाज को सशक्त और सप्रमाण बनाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

कीवर्ड्स

स्वामी दयानन्द सरस्वती, शैक्षिक विचार, आर्य समाज, शैक्षिक सिद्धांत

प्रस्तावना

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती जी ऐसी शिक्षा प्रणाली के पक्षधर थे जो युवकों में भारतीयता की भावना पैदा करने के साथ–साथ स्वदेश प्रेम व राष्ट्र शक्ति की भावना जागृत करने के सक्षम हो। स्वामी दयानंद जी के साथ अन्य उपदेशकों जैसे पंडित बस्तीराम, प्रचारक भगत फूल सिंह, सन्यासी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती आदि में भी शिक्षा संबंधी विचारों एवं सुधारों से संबंधित विचार प्रकट किए। इनका मानना था कि बालक की शिक्षा मां के गर्भ से ही आरंभ हो जाती है। इसलिए मां को बच्चे के जन्म के पश्चात ही बालक को भाषा, संस्कृति साथ ही विचार, परंपराओं का ज्ञान प्रदान करना चाहिए। आर्य समाज का मानना था कि मनुष्य का लौकिक एवं पारलौकिक दृष्टि से शुभ एवं कल्याण होना ही शिक्षा है।

हम कह सकते हैं कि आर्य समाज द्वारा सुझाए गए शैक्षिक विचार, शिक्षा के उष्श्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से शामिल होने चाहिए। जिन्हें देखते हुए हम आर्य समाज की शैक्षिक भविष्य के प्रति सोच बहुत सटीक थी। वर्तमान के विलासितापूर्ण और आधुनिकता वाले युग में शिक्षा प्रणाली के दोषों एवं सैद्धांतिक गिरावट को दूर करने के लिए आर्य समाज द्वारा सुझाए गए शैक्षिक विचारों को अपनाने की बहुत आवश्यकता है।

समस्या कथन

आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सार्थकता का अध्ययन।

शोध के उष्श्य–

1. शिक्षा के विकास में आर्य समाज के योगदान का अध्ययन करना।
2. आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सार्थकता का अध्ययन करना।

शोध की परिसीमाएं

1. प्रस्तुत शोध में केवल आर्य समाज के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध को आर्य समाज से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों तक सीमित रखा गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध में शोध के उष्श्यों की पूर्ति हेतु दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया गया। दार्शनिक विधि द्वारा आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती जी के बौद्धिक तार्किक चिंतन का विश्लेषण करके मानवीय मूल्यों एवं दृश्यों को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया जाएगा एवं ऐतिहासिक शोध विधि प्रयोग का मूल उष्श्य आर्य समाज द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सुधारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली व भावी जीवन के विकास के लिए उचित मार्ग प्रस्तुत करना है।

आर्य समाज का उदय एवं प्रसार

आर्य समाज की स्थापना 1857 में स्वामी दयानंद सरस्वती जी द्वारा की गई थी। उस समय केवल 30 सदस्य इसमें शामिल थे परंतु यह संगठन ज्यादा दिनों तक नहीं चल पाया इसलिए पुनः स्वामी जी ने बंबई आकर नींव डाली जिसके सदस्य संस्था 100 थी। महर्षि जी का कहना था कि यदि यह समाज प्रगति करना है तो देश की आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति होगी इसलिए वेदों को सर्वोच्च ग्रंथ माना और वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार किया इस प्रकार आर्य समाज का उदय एवं प्रसार हुआ।

आर्य समाज एवं शिक्षा

आर्य समाज का प्रमुख उष्श्य हिंदू समाज में सुधार लाने का प्रयास करना था। इसी कारण उन्होंने लोगों को सुशिक्षित करना अति आवश्यक समझा और शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए भ्रसक प्रयास किए साथ ही उपदेशों एवं सरल सिद्धांतों द्वारा शिक्षा के महत्व का ज्ञान कराया। स्वामी जी के अनुसार मनुष्य के लिए उसका वास्तविक आभूषण उसकी विद्या है न कि सोना एवं चांदी, वे ऐसी शिक्षा के पक्ष में थे जिसके द्वारा भारतीयता की भावना पैदा हो साथ ही स्वदेश प्रेम एवं राष्ट्र भक्ति की भावना जागृत हो।

1869 में फर्रूखाबाद में आर्य समाज द्वारा पहली पाठशाला खोली गई। इस पाठशाला का शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

आर्य समाज के शिक्षा संबंधी सिद्धांत

शिक्षा संबंधी सिद्धांतों में निःशुल्क शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा, लड़के एवं लड़कियों के लिए पृथक पृथक विद्यालय, गुरु एवं शिष्य के मध्य प्रेम संबंध, छात्रों का तपस्यात्मक जीवन, धार्मिक एवं सदाचारी अध्यापक आदि बातों को शामिल किया गया है।

आर्य समाज के शैक्षिक उष्श्य / विचार

1. **आत्मानुभूति** – महर्षि जी का मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास के अवसर प्राप्त होने चाहिए जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मा के विषद में सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सके।
2. **चरित्र निर्माण** – आदर्श चरित्र व्यक्ति को सफलता प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करता है। इसलिए शिक्षा द्वारा बालक के चरित्र का निर्माण किया जाना चाहिए।
3. **विश्वबंधुत्व एवं मानवता का विकास** – मानव धर्म सबसे बड़ा धर्म है इसलिए स्वामी जी व्यक्तिगत हित के साथ–साथ सामाजिक हित को भी महत्व देते हैं। और संपूर्ण मानवता की रक्षा ही मानव की आत्मा की रक्षा है। यह उपदेश दिया।
4. **शारीरिक एवं मानसिक विकास** – स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है साथ ही बालक का मानसिक रूप से स्वस्थ होना महत्वपूर्ण है इसके लिए माता–पिता परिवार, विद्यालय को भ्रसक प्रयास करने चाहिए।

पाठ्यक्रम– आर्य समाज द्वारा किसी पाठ्यक्रम की रचना तो नहीं की गई परंतु कुछ विषय एवं सिद्धांतों का वर्णन अवश्य किया गया है–

- गर्भावस्था के दौरान माँ का आचरण शुद्ध एवं सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए।
- आश्रम व्यवस्था सर्वोत्तम है।
- 25 वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य का पालन।
- मनुस्मृति, वाल्मीकि, रामायण एवं महाभारत के चुने हुए अंश पढ़ना।

- ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन कराने के लिए गणित, खगोल विद्या आदि विषयों का अध्ययन कराना।

शिक्षण पद्धति

शिक्षण के लिए व्याख्यान, उपदेश एवं व्यवहारिक विधियों का समर्थन किया गया है। अन्य विधियां–

1. स्वाध्याय विधि
2. प्रत्याक्षानुभव विधि
3. तर्क विधि
4. आगम विधि
5. साक्षात्कार विधि

शैक्षिक निहितार्थ –

आर्य समाज के शैक्षिक विचारों का वर्तमान समय में महत्वपूर्ण स्थान एवं उपयोगिता है जो निम्न प्रकार से है।

1. **पाठ्यक्रम संबंधी**– शिक्षा को शिल्पकला के साथ जोड़ना, शिक्षा को उष्श्यपूर्ण बनाना, योग शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विज्ञान आदि शिक्षा प्रक्रिया को विकास की राह की ओर अग्रसर करते है।
2. **शिक्षक संबंधी**– अध्यापक शिक्षा प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। आर्य समाज के अनुसार अध्यापक का आदर्श, व्यक्तित्व, सर्वगुण सम्पन्न, धैर्यवान, समय का पाबंद होना आवश्यक है। शिक्षा प्रक्रिया के विकास में अध्यापक के उपरोक्त गुण सहायक है।
3. **शिक्षण विधियों संबंधी**– शिक्षण विधियों का रोचक एवं आकर्षक होना अनिवार्य है आर्य समाज के शैक्षिक विचारों में बताई गई विधियां, जैसे– रोचक एवं सरल विधियां, ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करने वाली विधियां वर्तमान समय में अपना विशेष महत्व रखती है।

वर्तमान समय में प्रसांगिकता

आर्य समाज के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विशेष महत्व है क्योंकि इस समान ने शैक्षिक, आध्यात्मिक, नैतिकता, सामाजिक दृष्टि में व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिक पक्ष को महत्व दिया है। साथ ही हिंदू समाज को सशक्त और सप्रमाण बनाया। शिक्षा का प्रमुख उष्श्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है एवं आर्य समाज के शिक्षा संबंधी सिद्धांत, विचार इन उष्श्यों की प्राप्ति में सहायक हैं।

निष्कर्ष–

आर्य समाज के दर्शन पर आधारित शिक्षा की अनेक विचार एवं विशेषताएं आधुनिक एवं वर्तमान समाज में भी प्रसांगिक है। जैसे अनुशासन, आदर्श चरित्र, शिक्षा के उष्श्य, छात्र अध्यापक संबंध, आदि विचारों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली को समाहित करके अनेक प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य प्रेमभिक्षु (2009) ''दयानंद की दया'' सत्य प्रकाशन वदमंदिर, वृन्दावन मार्ग, मथुरा।
2. पंडित चामुपति (2012) ''टैन कोमपोनेन्टस ऑफ आर्य समाज'' डी ए वी पब्लिकेशन डिवीजन, दिल्ली।
3. यादव, ए. आर (2015) ''आर्य समाज एवं स्वतांत्रिक गतिविधियां।
4. लाला गणेशी लाल (2018) ''आर्य समाज (वैदिक सोसायटी) और द न्यू लाइट ऑफ एशिया'' टरयू वर्ल्ड बुक्स दिल्ली।
5. लाला लाजपत राय (2021) ''द आर्य समाज : एन अमाउंट ऑफ इटस ओरिजन डॉक्टराइन एण्ड एक्टीवीटिस, विद ए बायोग्रैफिक्ल स्कैच ऑफ द फाउंडर'' ज्ञान पबिलसिंग हाऊस।